French Revolution 1789

Quest. What were the causes of the French Revolution ?
फ्रांस की राज्य क्रांति के क्या कारण थे ?

Or Discuss the Social, Political and economic conditions of French in 1789.
सन 1789 ई० में फ्रांस की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दशा का वर्णन करें।

Ans. विश्व इतिहास में फ्रांस की राज्य क्रांति का एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक ऐसी क्रांति थी जिसने विश्व को सोते से जगाया था। इस तरह से इस क्रांति के कीर्तिगाथा के साथ ही साथ यूरोप का इतिहास एक शब्द, एक घटना और एक पुरुष के इतिहास में मिलकर एक हो जाता है, वह शब्द है "फ्रांस" वह घटना है फ्रांस की राज्य-क्रांति और वह व्यक्ति है नेपोलियन बोनापार्ट। इतना ही नहीं इस क्रान्ति ने एक युग का अन्त और दूसरे युग के आगमन का मार्ग खोल दिया। यह क्रांति विचारों की क्रांति थी। यह केवल हथियारों की लड़ाई ही नहीं थी। इसलिए इस क्रान्ति ने विश्व के कोने कोने में शासन के नवीन सिद्धान्तों, सामाजिक व्यवस्था के नवीन विचारों और मानव अधिकार के सिद्धान्तों को समुचित ढंग से फैलाया। इस तरह से इस क्रान्ति ने यूरोप की पुरानी प्रथाओं, परम्पराओं और रीति-रिवाजों तथा संस्थाओं को चुनौती दी। इस तरह से इस क्रान्ति का महत्व अत्यधिक प्रमुख है।

अध्ययन ने यह सिद्ध कर दिया है कि क्रांति एकाएक नहीं होती। इसके लिए बहुत पहले से पृष्ठभूमि तैयार की जाती है। अतः फ्रांस की राज्य क्रान्ति एकाएक न होकर उसका बीज बहुत पहले ही रोपा जा चुका था जो समय और परिस्थिति को पाकर पनप गया। इस तरह से फ्रांस की राज्य क्रांति के निम्नलिखित कारण प्रमुख थे —

1. सामाजिक कारण — फ्रांस का समाज विषमताओं और असमानताओं पर आधारित था। फ्रांस का समाज तीन भागों में बंटा हुआ था जो निम्नलिखित थे —

i. पादरी वर्ग — फ्रांस में कैथोलिक धर्म का बोलबाला था जिससे वहाँ पादरियों और चर्चों का प्रभुत्व था। सर्वत्र उनका लोहा माना जाता था। वहाँ पादरियों का भी दो वर्ग था — एक बड़ा पादरी और दूसरा छोटा पादरी।

बड़ा पादरी — फ्रांस में बड़े पादरियों की संख्या बहुत ही कम थी परन्तु उनके पास अपार धन सम्पत्ति थी। वे लोग विशाल भवनों में रहते थे। सोना-चाँदी, हीरा-जवाहरात उनके पास थे। फ्रांस की समस्त भूमि का पाँचवाँ हिस्सा भी उनके पास था। इस तरह से उनको किसी चीज की कमी न थी। उनका रहन-सहन, ठाट-बाट, खान-पान उच्च कोटि का था। राजकोष में वे नाममात्र का कर देते थे।

Scanned with CamScanner

अतः उनका जीवन बहुत ही सुखमय था। दशांश (टाइथ) से भी उनको काफी आमदनी होती थी। अतः वे लोग धन से अन्धे हो गये थे। आध्यात्मिकता से उनको कोई जरूरत नहीं थी वे लोग सुरा, सुन्दरी, संगीत और रंगरेलियां में मस्त रहते थे जिनकी वजह से चर्च में अनेक बुराइयों का प्रवेश हो चुका था, फिर भी पादरी वर्ग अपने विशेषाधिकारों का भी दुरुपयोग कर रहे थे। शासन में भी चर्च को स्वतन्त्रता प्राप्त थी लेकिन इस वर्ग से आम जनता बहुत ही असंतुष्ट थी। चर्च पर से लोगों की श्रद्धा उठती जा रही थी क्योंकि लोग चर्च को ही सब तरह की बुराईयों का जड़ समझते थे। इस सम्बन्ध में वाल्टेयर का कथन था कि Crush the Infamous Church अर्थात भ्रष्ट चर्च को नष्ट कर दो। इस तरह से बड़े पादरियों के काले कारनामों ने क्रांति को जन्म दिया।

छोटे पादरी — फ्रांस में छोटे पादरियों की संख्या बड़े पादरियों के मुकाबले कई गुणा ज्यादा थी लेकिन इन लोगों के पास धन-सम्पत्ति का पूर्ण अभाव था। इनकी दशा शोचनीय थी। वे शहरों और देहातों में रहते थे। अपनी गरीबी से वे परेशान थे। कहीं उनकी इज्जत प्रतिष्ठा न थी। इसलिए छोटे पादरी लोग बड़े पादरी वर्ग से घृणा करते थे। अतः दोनों वर्गों के पादरियों में विद्रोह हो गया। इस आपसी संघर्ष के कारण चर्च की बदनामी बहुत बढ़ गई थी। चर्च ही शिक्षा का भी प्रबन्ध करता था परन्तु चर्च स्वतंत्र विचारों का विरोधी था और निरंकुशतावाद का कट्टर समर्थक था। इस तरह पादरियों के आपसी विरोध से भी क्रांति आगे बढ़ी।

सामन्त वर्ग — फ्रांस के समाज में पादरियों के बाद कुलीनों का स्थान था। इनके पास अपार सम्पत्ति थी। इनके पास भी किसी चीज की कोई कमी नहीं थी। ये लोग राज्य के बड़े-बड़े पदों पर बैठे थे। जिससे समाज में इनका बहुत आदर था। लोग इनको My Lord या your Grace कहा करते थे। फिर इनको किसी प्रकार का कर सरकार को नहीं देना पड़ता था। इनके पास फ्रांस की भूमि का पाँचवा भाग था। इसके अलावा भी इन्हें सम्राट की ओर से पेंशन, पुरस्कार, एकाधिकार और विशेषाधिकार दिये जाते थे यद्यपि प्रत्यक्ष नहीं अप्रत्यक्ष रूप से इनको बहुत तरह के करों को चुकाना पड़ता था परन्तु इन करों से बचने के लिए वे कई तरह के उपाय किया करते थे। सरकारी पद उनके लिए सुरक्षित रखा जाता था। इतना ही नहीं इनके पास बड़ी-बड़ी जागीर थी। ये लोग ठाट-बाट से जीवन यापन कर बुलन्द महलों में रहकर और भोग-

Scanned with CamScanner

विलास में लेकर भी जनता का शोषण करते थे। अतः जनता उनके कार्यों से ऊब गई थी और क्रांति के द्वारा उनसे छुटकारा पाना चाहती थी।

सर्वसाधारण वर्ग — इस वर्ग में दो तरह के लोग थे - एक देहात में रहने वाले किसान और दूसरे शहरों में रहने वाले मध्यम वर्ग के लोग। देश के अधिकतर लोग इसी वर्ग में थे। इस वर्ग में निम्न वर्ग (Third Estate) या विशेषाधिकारों से वंचित वर्ग भी कहा जाता था। यह वर्ग राज्य का स्तम्भ था परन्तु सबसे अधिक शोषित, दलित और उपेक्षित था। इसलिए इस वर्ग के सभी लोगों के हृदय में विद्रोह की आग दहक रही थी। किसानों में आधे से भी अधिक अर्द्ध दास के समान थे। सभी किसान अपने को दासता की बेड़ी में जकड़ा हुआ महसूस करते थे क्योंकि उनको भी सरकारी कर, नजराने और चर्च को दशांश देना पड़ता था। उनको अपने मालिक के यहाँ सप्ताह में तीन दिन बेगारी करनी पड़ती थी। उनको बाजार में पुल पार करते समय चुंगी देनी पड़ती थी। उनको अधिक पैसा देकर अपने मालिक के मिल में आटा पिसवाना पड़ता था। सामन्त, मालिक, चर्च और राजा को टेक्स देने के बाद उनके पास कुछ नहीं बचता था। समाज में मध्यमवर्ग का महत्व बढ़ रहा था क्योंकि इन लोगों में बुद्धि-ज्ञान और चेतना की भरमार थी, परन्तु यह वर्ग विशेषाधिकारों से रहित था। गिल्ड्स के नियमों से कारीगरों का हाथ-पैर बंध गया। मजदूरवर्ग की हालत और भी खराब थी इसलिए ये लोग कुलीनों से बहुत नाराज थे। इस सम्बन्ध में नेपोलियन का कथन था कि फ्रांस की क्रांति का वास्तविक कारण मध्यमवर्ग के लोगों का अभिमान था। स्वाधीनता तो महज एक बहाना था। मध्यमवर्ग के लोग सामाजिक समानता चाहते थे।

2. **राजनीतिक कारण** — फ्रांस के शासन की बागडोर राजा के हाथ में थी। राजा स्वेच्छाचारी और दैवी अधिकार के सिद्धान्त में विश्वास करता था। इसलिए राजा जो बोलता था वही कानून था। उसकी बातों का खण्डन करना पाप समझा जाता था इसलिए सर्वत्र राजा की ही चलती थी। राजा के सम्बन्धियों, उसके कृपापात्रों और उसके आश्रितों की भी खूब चलती थी। भोग-विलास ही उसके जीवन की विशेषता थी। जनता द्वारा दिये गये धन का खर्च भोग-विलास पर ही खर्च होता था। उसकी अदालतें भी अलग-अलग थी। कर में एकरूपता न थी। एक स्थान में नमक पर 10% कर लगता था तो दूसरे स्थान पर 3% ही कर लिया जाता था और तीसरे स्थान पर 5% नमक कर लिया जाता था। इसी तरह कर सरकारी कर्मचारी जनता को खूब परेशान किया करते थे और उनके

ध्यान से अपनी जीविका भरते थे। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध इतिहासकार हेलेन मोरिन की यह उक्ति ठीक है कि "The old Regime in Europe was diposed to the very principles in which it rested." अतः फ्रांस के हर क्षेत्र में अलग-अलग नियम थे जिसके फलस्वरूप हर एक भाग एक दूसरे से कटा हुआ था। फलतः शासन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा था। माप-तौल के यन्त्र भी अलग-अलग थे। व्यापार पर आर्थिक चुंगियाँ थी। इनसब का प्रभाव उद्योग-धंधों पर भी पड़ा। इतना ही नहीं फ्रांस के व्यापारियों को एक ही माल के लिए कई जगहों पर कर देने पड़ते थे। न्याय के लगभग 400 नियम थे जिनका पालन करने में प्रान्तों और जिलों के कर्मचारियों की खूब मनमानी होती थी जिससे हर जगह उलझन पैदा हो गयी थी। ऐसी परिस्थिति में क्रांति का होना कोई विचित्र बात नहीं थी।

3. आर्थिक कारण — 18वीं सदी में फ्रांस की आर्थिक दशा भी दयनीय थी। अगर फ्रांस की आर्थिक दशा नहीं बिगड़ती तो फ्रांस में इतनी जल्दी क्रान्ति नहीं होती। फ्रांस की आर्थिक दशा इतनी बिगड़ गई कि वहाँ राष्ट्रीय आय और व्यक्तिगत आय में कोई अन्तर न था। राजकीय आय का उपयोग राजा और उसके मंत्रिगण अपने कार्य में करते थे। वार्षिक बजट के अभाव में वहाँ आमद-खर्च का कोई लेखा-जोखा भी नहीं होता था। राजकीय कोष में प्रत्यक्ष और परोक्ष कर से आमदनी आती थी। परोक्ष कर-नमक, शराब, तम्बाकू और आयात तथा निर्यात के मालों पर लगाया जाता था। नमक पर बहुत अधिक कर था। कर बड़े-बड़े अमीर लोग वसूलते थे। वे लोग निश्चित रकम लेकर यह काम ठेकेदारों को दिया करते थे। ठेकेदार लोग कर वसूलने में मनमानी करते थे।

प्रत्यक्ष कर भूमि और अन्य प्रकार की सम्पत्ति पर लगाया जाता था। लेकिन आधी से भी अधिक भूमि के मालिक कुलीन और पादरी वर्ग के लोग थे जो करों के बोझ से मुक्त थे। किसानों पर कर का सबसे ज्यादा बोझ था। जिसको वे लोग वहन नहीं कर पा रहे थे। इस तरह की आर्थिक गड़बड़ी से भी फ्रांस में क्रान्ति हुई।

4. दार्शनिक कारण — तत्कालीन फ्रांस दार्शनिकों का गढ़ था। इन्हीं दार्शनिकों ने आम जनता के मूक असन्तोष को मुखरित कर दिया था जिससे प्राचीन अन्धविश्वास, रूढ़ि, परम्परा और प्रथाओं की दीवारें

Date ______
Page ______

हो गई। तत्कालीन प्रमुख दार्शनिक विचारकों में रूसो, वाल्टेयर, मान्टेस्क्यू, दिदरो आदि थे। इन सब विचारकों ने पुरानी व्यवस्था में सुधार लाने का सन्देश लोगों को दिया। इन विचारकों ने अपने विचारों के प्रचार के लिए बहुत सी पुस्तकों, पत्रिकाओं और पत्रों को छपवाया, जिसको जनता बड़े चाव से पढ़ने लगी। रचनाओं और भाषणों में उनका सन्देश अत्यन्त ही व्यावहारिक और लाभप्रद था। रूसो का सामाजिक समझौता का सिद्धान्त (Social Contract Theory) बहुत ही प्रसिद्ध है। इसमें सरकारी सत्ता का मुख्य आधार शासितों की इच्छा को माना गया है जिसको रूसो (General will) कहा करता था। इस तरह से रूसो सार्वभौम सत्ता को जनता के हाथों में सौंपना चाहता था।

वाल्टेयर चर्च में प्रचलित ~~आर्थिक~~ धार्मिक पक्षपात और निराधार विश्वासों को दूर करना चाहता था। चर्च की आलोचना करने और उसकी बुराइयों को परखने में वह माहिर था। वह तीखे व्यंग्य और कटाक्ष के लिए प्रसिद्ध था। वह एक ही साथ इतिहासकार, साहित्यकार, विचारक और प्रसिद्ध दार्शनिक भी था। उपन्यास लिखने में वह बेजोड़ था। स्वयं वाल्टेयर का कथन था कि (it is better to be governed by one lion than to a hundred liones or rats".) इस तरह वाल्टेयर के प्रभाव से फ्रांस में चर्च की शक्ति का ह्रास होने लगा।

मान्टेस्क्यू "शक्ति विभाजन" के सिद्धान्त (Principle of Separation of Power) का प्रतिपादक था। वह कार्यपालिका Executive व्यवस्थापिका Legislative और न्यायपालिका judiciary के अधिकारों को पृथक पृथक रखना चाहता था।

दिदरो और वाल्टेयर "विश्व कोष" की रचना कर चुके थे। इस विश्व कोष ने सम्पूर्ण फ्रांस में तहलका मचा दिया। अतः यह भी क्रांति का एक बहुत बड़ा कारण था। इनके अतिरिक्त क्वेस्ने और रेबोसियर और भी कई बड़े विचारक थे जो अपने विचारों से जनता को प्रभावित कर रहे थे।

इन दार्शनिकों की शिक्षा का प्रभाव सबसे अधिक मध्यम वर्ग के लोगों पर पड़ा। जो कुलीनों और पादरी वर्ग को देखना नहीं चाहते थे। किसानों और मजदूरों पर भी उनके उपदेशों का गहरा असर पड़ा। इस तरह से दार्शनिकों ने फ्रांस में क्रान्तिकारी वातावरण तैयार कर दिया। अतः एक विद्वान का यह कथन सही है कि "आर्थिक कारणों ने फ्रांस की क्रान्ति रूपी रेल के डिब्बों को तैयार कर लिया और दार्शनिकों ने इंजन बनकर फ्रांस की क्रान्ति रूपी रेल को लेकर दौड़ा दिया।

Scanned with CamScanner

5. **अवैध गिरफ्तारियाँ और प्रतिबन्ध** — फ्रांस की शासन व्यवस्था में अवैध ढंग से गिरफ्तारियाँ होती थी और लोगों पर अनेक तरह के प्रतिबन्ध भी होते थे। कुलीनों तथा राजा के कृपापात्रों को आग्रह कर देने पर लोगों को सरकारी वारंट या "letter deeachect" के द्वारा उसको बन्दी बनाकर जेल में बंद कर दिया जाता था। ऐसे अभियुक्तों को अपने जीवन का शेष समय जेल में ही बिताना पड़ता था। इसके द्वारा बड़े-बड़े या प्रशासन से जुड़े लोग व्यक्तिगत दुश्मनी का बदला लोगों से लेते रहते थे। नये विचारक और दार्शनिक लोग इसके शिकार होते थे। वाल्तेयर को भी इसका शिकार बनना पड़ा। इससे मध्यम वर्ग के लोग अधिक परेशान थे। फलतः सर्वत्र अशान्ति थी। इस लिए इस तरह के प्रतिबंध से लोग मुक्त होना चाहते थे अतएव लोग क्रान्ति के पक्ष में होकर क्रान्ति कर बैठे।

6. **सैनिकों में असन्तोष की भावना** — फ्रांस की शासन व्यवस्था से सैनिक लोग भी पूर्णरूपेण असंतुष्ट थे। नवीन विचारों का प्रभाव सैनिकों पर भी पड़ रहा था। सैनिकों का वेतन बहुत कम और वह भी समय पर नहीं मिलता था। उनको खाना भी सही ढंग से नहीं मिल पाता था। सैनिकों के वीरतापूर्ण कार्य पर भी उनको सम्मान या पदोन्नति नहीं दी जाती थी। बड़े-बड़े पदों पर बाहर के सैनिकों को ही रखा जाता था फलतः साधारण सिपाही उनके प्रति आदर का भाव नहीं रखते थे। सैनिकों के पदों का वितरण योग्यता और कुशलता के आधार पर न होकर कुलीनता के आधार पर होता था। इससे भी सैनिकों के हृदय में असमानता और असन्तोष की भावना भर गई थी। वहाँ के सैनिक अधिकारियों के नियंत्रण से बाहर चले गये थे। अधिकारियों में वो क्षमता भी नहीं थी वे भोग-विलास में मस्त रहते थे। यही कारण है कि फ्रांस के सैनिक क्रान्तिकारियों को कुचलने की बजाय समय पर क्रान्तिकारियों का ही साथ दे दिया। जिससे क्रान्तिकारियों को सफलता मिली।

7. **अमेरिका का स्वाधीनता संग्राम** — अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम ने भी इन क्रान्तिकारियों को आगे बढ़ाने में सहायता पहुँचाई। इसने क्रांति की सोई हुई भावना को खूब उभारा। अमेरिका के स्वाधीनता संग्राम में फ्रांस के बहुत से नवयुवक स्वयंसेवक अमेरिका की मदद को पहुँच गये थे, वे अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम में लड़े और उसे बहुत निकट से भी देखा। उन लोगों ने

अनुभव किया कि फ्रांस में भी क्रांति द्वारा राजा के स्वेच्छाचारिता से बचाया जा सकता है। वहाँ से लौट आने के बाद फ्रांस का युवा वर्ग क्रांति में सक्रिय भाग लिया। इससे भी फ्रांस की क्रांति को आत्मात्मिक बल मिला।

8. शासक की अयोग्यता — क्रांति के समय फ्रांस का शासक 16 वाँ लुई था। जो अयोग्य था और अपनी रानी मेरी आंतोआनेत के हाथ का खिलौना था। वह सुरा और सुन्दरी में व्यस्त रहता था। शासन कार्य करने का उसके पास समय ही नहीं था। शासन तो उसकी पत्नी करती थी। वह भी अपने प्रेमियों की इच्छानुसार। राजा वर्साइल्स के राजमहल में पड़ा रहता था। वह साहसी नहीं था। तत्कालीन परिस्थितियों का सामना करने के लिए राजा को बहुत अधिक साहसी होने की जरूरत थी लेकिन यह गुण राजा में नहीं था। जिसका फल बहुत बुरा निकला। उसने नेकर और तुर्गो जैसे योग्य अर्थशास्त्रियों को हटा दिया। अगर राजा उनके सुझावों को मानकर समय पर उसे लागू करता तो फ्रांस की आर्थिक दशा में सुधार आ जाता और क्रांति कुछ समय के लिए टल जाती। परन्तु राजा अपनी अयोग्यता के कारण ऐसा न कर सका। अतः राजा की अयोग्यता ने क्रांति की आग में घी का काम किया।

9. शासन का दिवालियापन — फ्रांस का राजा और रानी बहुत अधिक खर्च करते थे। शासन कार्य को छोड़कर राजा और रानी का व्यक्तिगत खर्च कई करोड़ सलाना था। वर्साय के महल में राजा और रानी के सेवकों की संख्या बहुत अधिक थी। रानी अपने नैहर से आये प्रेमियों पर अपार दान खर्च करती थी। इस तरह से फ्रांस का खजाना एकदम खाली हो गया था। ठीक इसी समय फ्रांस ने अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम में धन-जन से अमेरिका की मदद पहुँचायी जिस से फ्रांस का दिवाला निकल गया। और क्रांति जोर पकड़ती चली गई।

10. प्राकृतिक कारण — उपरोक्त कारणों से फ्रांस में परिस्थिति बहुत ज्यादा खराब थी। राजा की अयोग्यता, रानी का अत्यधिक खर्च, आर्थिक असमानता, सामाजिक भिन्नता, खजाने का खाली होना इत्यादि बातें के अलावा प्रकृति प्रकोप ने भी क्रांति को और उभारा। 1779 ई० में ही फ्रांस में लगातार बाढ़, अतिवृष्टि और कहीं कहीं अनावृष्टि और ओले के प्रकोप से फ्रांस तबाह हो गया था। फसल की बर्बादी से लोग भूखे मरने लगे थे। फलतः रोजी-रोटी के लिए जगह-जगह पर बगावत हो रही थी। सन 1780 ई० में औद्योगिक क्रांति ने तो परिस्थिति को और भी विषम बना दिया, क्योंकि इससे व्यावसायिक वर्ग संकट के भार से बहुत दबने लगा। सभी

Scanned with CamScanner

classmate
Date
Page

एकजुट होकर शासन के विरुद्ध हो गये। शासक वर्ग की निन्दा होने लगी। अत्याचार का प्रतिकार के लिए लोग तैयार हो गये। फलतः आर्थिक संकट को दूर करने के लिए States Generals की बैठक बुलायी गयी। दूसरी बैठक ने क्रांति को निमन्त्रण दे दिया जिसके फलस्वरूप सन 1789 ई० में क्रांति हुई जिससे सम्पूर्ण फ्रांस क्रांति की आग में धू-धू कर जलने लगा।